

V. वित्तीय बाजार

चलनिधि घाटे की स्थिति में मौद्रिक नीति का प्रभाव बढ़ने से 2011-12 की ति1 के दौरान सभी क्षेत्रों में ब्याज दरें और बढ़ गयीं। इक्विटी बाजारों में नरमी बनी रही किंतु तिमाही के अंत में इनमें तेजी आयी जिसका कारण मूल्यन में वृद्धि होना था। 2010-11 की ति4 में वित्तीय आस्ति मूल्य सामान्यतः दायराबद्ध रहे हालांकि संपत्ति के मूल्य ऊपरी दायरे में रहे। इसके अलावा उन्नत अर्थव्यवस्थाओं द्वारा मौद्रिक छूट से बाहर निकलने में विलंब होने की संभावना, यूरो झोन में सरकारी ऋण में चूक की जोखिम और प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं की रेटिंग कम होने की संभावना से पूंजी प्रवाहों और वित्तीय बाजारों में दिशाओं में वृद्धि होगी।

2011-12 की ति1 में वैश्विक वित्तीय बाजारों की स्थिति में नरमी बनी रही

V.1 अप्रैल 2011 के अंत से वैश्विक वित्तीय बाजार सुधार की स्थिति में थे (चार्ट V.1क)। उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में स्थावर संपदा बाजारों में जड़ता, उच्च बेरोजगारी और सरकारी तुलनपत्रों की दुर्बल स्थिति से वित्तीय बाजारों की चिंताएं निरंतर बनी रहीं। वैश्विक वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट के आईएमएफ जून 2011 के बाजार अपडेट में निम्न कारणों से वित्तीय जोखिम में वृद्धि दर्शायी गयी थी (i) बहु-गतीय सुधार बेसलाइन में अधोमुखी जोखिम; (ii) यूरोप में ऋण व्यवहार्यता संबंधी चिंता; और (iii) "प्रतिलाभ की खोज" निवेशकों को जोखिमपूर्ण आस्तियों

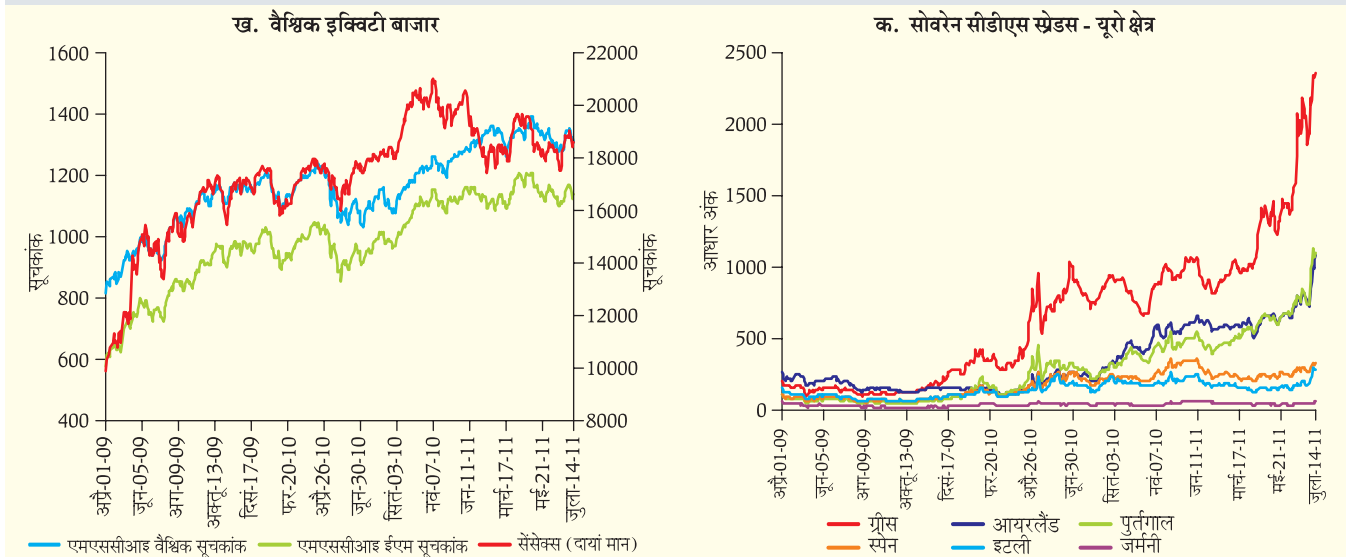
की ओर धकेल रही है। उन्नत अर्थव्यवस्थाओं तथा उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं में विशेष रूप से मार्च 2011 के अंत से आय वक्र का सपाट हो जाना 2011-12 के दौरान आर्थिक वृद्धि में नरमी आना, हालांकि अलग प्रकार से, दर्शाता है।

ऋण विस्तार में वृद्धि, रेटिंग में गिरावट व्यष्टि और समष्टि विवेकाधीन जोखिम दर्शाती है

V.2 औसतन, 2011-12 की ति1 के दौरान ऋण विस्तार में वृद्धि हुई जैसा कि तुलनपत्रीय जोखिम सामने आने से दिखता है। ग्रीक ऋण संकट बढ़ जाने और संकट के यूरोप के आंतरिक क्षेत्र के कुछ देशों तक पहुंच जाने की आशंका के चलते यूरो क्षेत्र में सरकारी ऋण चूक स्वैप का विस्तार तेजी से बढ़ा (चार्ट V.1ख)। अमरीका, जापान, स्पेन और इटली के मामले में रेटिंग में गिरावट या उनकी संभावना में अधोमुखी संशोधन से वित्तीय बाजारों के विश्वास को प्रभावित किया जो कि विस्तार बढ़ने में दिखा। ग्रीस और पुर्तगाल में पुनर्वित्तीयन जोखिम में वृद्धि और पुर्तगाल की ऋण रेटिंग संस्था मूडी द्वारा तेज चौमुखी गिरावट वाला संशोधन जिसमें जुलाई के आरंभ में नकारात्मक संभावना ने यूरो क्षेत्र की दुर्बलता की पुष्टि कर दी।

V.3 संकट से जूझ रहे यूरो क्षेत्र के देशों में बैंकिंग प्रणाली का पुनर्पूजीकरण यूरो क्षेत्र की समस्याओं की दृष्टि से महत्वपूर्ण घटक है।

चार्ट V.1: वैश्विक वित्तीय बाजार गतिविधियों के संकेतक



यूरोपीय बैंकिंग प्राधिकारी (ईबीए) द्वारा की गयी तनाव जांच निवेशकों और ऋणदाताओं के बीच विश्वास बढ़ाने में सफल नहीं हुई। यूरोपीय संघ द्वारा तनाव जांच में विफल हुए बैंकों की पूंजी की कमी से निपटने की आवश्यकता है किंतु ग्रीस, पुर्तगाल और आयरलैंड जैसी दुर्बल अर्थव्यवस्थाओं को के लिए बाजार तक पहुंच सीमित है। दूसरी ओर, राजकोषीय कमी और साथ ही आर्थिक सहायता की संभाव्य नैतिक जोखिम के चलते यह समाधान आसान नहीं है। यूरो क्षेत्र की जोखिम वैश्विक वित्तीय बाजारों में अस्थिरता ला सकती है।

वित्तीय जोखिम में वृद्धि हुई जबकि ब्याज दरों में कमी आयी

V.4 2011-12 की ति1 में जहां भारतीय अर्थव्यवस्था में ब्याज दरें बढ़ी, वहीं वैश्विक वित्तीय बाजारों में वित्तीय जोखिम बढ़ी और ब्याज दरों में कमी आयी। 1-माह से 1- वर्ष के लिबोर में कम ब्याज दरों के कारण भी गिरावट आयी। विविध अवधिपूर्णता वाली सरकारी प्रतिभूतियों पर प्रतिलाभ अमरीका, यूके और जर्मनी के 5-10 वर्षीय घटक में 30-50 आधार अंक कम हुआ। कम होती ब्याज दरों के साथ निम्न बातें भी हुई (1) कुछ उन्नत देशों के केंद्रीय बैंकों द्वारा और विशेष रूप से ईसीबी द्वारा अप्रैल और बाद में जुलाई में नीतिगत दरों में वृद्धि की गयी, (2) सरकारी और ऋण विस्तार हुआ और (3) उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में ऊर्जा और खाद्य मूल्य बढ़ने से मुद्रास्फीति बढ़ी जिससे उत्पादक मूल्य और हेडलाइन मुद्रास्फीति में वृद्धि हुई। अभी यह स्पष्ट नहीं हुआ है कि क्या ब्याज दरों में घट-बढ़ अस्थायी प्रतिक्रिया है या इसका आधार भावी वैश्विक वृद्धि की अपेक्षा है।

भारतीय वित्तीय बाजारों की स्थिति ठीक और दायराबद्ध बनी रही

V.5 देशी-विदेशी कारकों द्वारा भारतीय वित्तीय बाजारों की दोतर्फ गतिविधियों को प्रभावित करने के बावजूद आस्ति मूल्य घट-बढ़ सामान्यतः दायराबद्ध और ठीक बनी रही। यह बात मुद्रास्फीति की निरंतरता, चलनिधि की कड़ी स्थिति, और ग्रीक सरकारी ऋण संकट तथा उन्नत देशों में मंदी के कारण अंतरराष्ट्रीय बाजारों में अनिश्चितता के बाद भी हुई थी।

V.6 चलनिधि की अधिकता के कारण 2011-12 की ति1 की शुरुआत में मांग दर कम हो गयी किंतु मई 2011 से नीतिगत दर वृद्धि के साथ मांग दर बढ़ गयी। वाणिज्यिक पत्रों (सीपी) और जमा प्रमाणपत्र (सीडी) पर ब्याज दरें एक दिवसीय मुद्रा बाजार दरों के अनुरूप रहीं। सरकारी प्रतिभूतियों का प्रतिलाभ वक्र नीतिगत दर वृद्धि के अनुरूप तिमाही के पहले दो महीनों में ऊपर हो गया किंतु जून 2011 में यह अधोमुखी हो गया।

V.7 2011-12 की ति1 के दौरान स्टॉक मूल्य में गिरावट आयी हालांकि अन्य बीआरआईसी देशों की तुलना में इसकी गति कम थी जो कि देशी और विदेशी चिंताओं से प्रभावित थी। किंतु विदेशी संस्थागत निवेशकों के अंतर्वाहों के कारण तिमाही के अंत में इसमें वृद्धि हुई। भारतीय शेयरों का पी-ई अनुपात अन्य बीआरआईसी देशों की तुलना में अधिक था (सारणी V.1)। आवास बाजार में मूल्य 2010-11 की ति3 में नरम रहने के बाद रिजर्व बैंक की सूचना के अनुसार तिमाही-

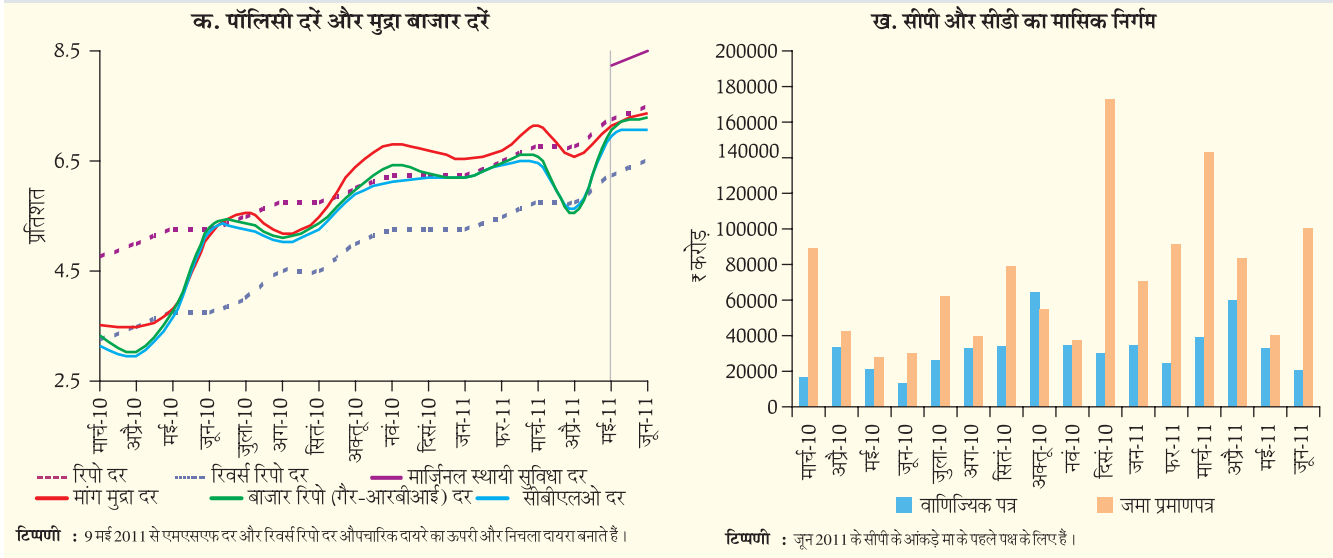
सारणी V.1: ईएमई में शेयर मूल्य घट-बढ़ और पी ई अनुपात (वर्ष-दर-वर्ष अंतर)

मद	स्टॉक मूल्य घट-बढ़			पी/ई की घट-बढ़		
	मार्च 2010 के अंत में @	मार्च 2011 के अंत में @	जून 2011 के अंत में *	मार्च 2010 के अंत में	मार्च 2011 के अंत में	जून 2011 के अंत में
1	2	3	4	5	6	7
इंडोनेशिया (जकार्ता कंपोजिट)	93.7	32.5	5.7	16.6	16.9	17.9
ब्राजील (बोवेस्पा)	71.9	-2.5	-9.0	16.2	10.9	9.8
थाइलैंड (सेट कंपोजिट)	82.6	32.9	-0.6	12.4	13.3	13.3
भारत (बीएसई सूचकांक)	80.5	10.9	-3.1	17.7	17.6	17.1
दक्षिण कोरिया (केओएसपीआई)	40.3	24.4	-0.3	12.2	13.8	13.9
चीन (शंघाई कंपोजिट)	31.0	-5.8	-5.7	23.0	16.3	15.4
ताइवान (ताइवान सूचकांक)	52.0	9.6	-0.4	19.1	15.7	15.5
रूस (आरटीएस)	128.0	30.0	-6.7	9.0	8.4	7.6
मलेशिया (केएलसीआई)	51.3	17.0	2.2	18.9	17.0	16.8
सिंगापुर (स्ट्रेटस टाईम्स)	69.9	7.6	0.5	13.4	10.3	10.5

@ : वर्ष-दर-वर्ष भिन्नता
स्रोत: ब्लूमबर्ग.

*: मार्च 2011 के अंत की स्थिति से अंतर।

चार्ट V.2: मुद्रा बाजार दरों और टर्नओवर की गतिविधियां



दर-तिमाही आधार पर ति4 में इनमें अधिकतर शहरों में बढ़त हुई।

चलनिधि की कमी और दर वृद्धि के कारण मुद्रा बाजार दरों में वृद्धि हुई किंतु यह तनाव के स्तर तक नहीं पहुंची

V.8 अल्पावधि दरों में और वृद्धि हुई किंतु मुद्रा बाजार में चिंता की स्थिति नहीं थी। तिमाही और चलनिधि की कमी की स्थिति के दौरान ब्याज दरों में 75 आधार अंकों की वृद्धि हुई। 2011-12 की ति1 के दौरान मौद्रिक नीति का प्रभाव और बढ़ गया। चलनिधि की स्थिति में सुधार होने से अप्रैल 2011 में मांग दर कम हो गयी थी जो कि मई और जून 2011 में रिपो दर वृद्धि के प्रतिसाद में बढ़ गयी (चार्ट V.2क,

सारणी V.2)। संपार्श्विकीकृत घटकों (अर्थात सीबीएलओ और बाजार रिपो) में दरें मांग दरों के अनुरूप बढ़ी किंतु सामान्यतः इनसे नीचे बनी रहीं।

V.9 2011-12 की ति1 के दौरान सीबीएलो और बाजार रिपो घटक में लेनदेनों की मात्रा पिछली तिमाही की तुलना में अधिक थी (सारणी V.3)। तिमाही के दौरान बैंक और प्राथमिक व्यापारी संपार्श्विकीकृत घटक के मुख्य समूह थे जबकि पारस्परिक निधियों ने सीबीएलओ में कुल उधार का लगभग तीन-चौथाई तथा बाजार रिपो घटक में आधे से अधिक का योगदान किया। एक दिवसीय मुद्रा बाजार के संपार्श्विकीकृत घटक की प्रमुखता बनी रही जो कि 2011-12 की ति1 के दौरान कुल मात्रा के 80 प्रतिशत से अधिक था।

सारणी V.2: घरेलू वित्तीय बाजार - एक नजर में

	मुद्रा बाजार					बांड बाजार		फोरेक्स बाजार	शेयर बाजार सूचकांक	
	मांग दर* (प्रतिशत)	बाजार रिपो दर (गैर-भारिबैं) (प्रतिशत)	सीबीएलओ दर (प्रतिशत)	वाणिज्यिक पत्र डब्ल्यूएडीआर (प्रतिशत)	जमा प्रमाणपत्र डब्ल्यूएई आइआर (प्रतिशत)	सरकारी प्रतिभूति 10 वर्षीय आय @ (प्रतिशत)	कारपोरेट बांड आय-एए 5 वर्षीय बांड (प्रतिशत)	विनिमय दर @@ (₹/अम. डा.)	सीएनएक्स निफ्टी #	बीएसई सेनसेक्स #
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
मार्च-10	3.51	3.32	3.15	6.29	6.07	7.94	8.61	45.50	5178	17303
मार्च-11	7.15	6.56	6.46	10.40	9.96	8.00	9.23	44.99	5538	18457
अप्रैल-11	6.58	5.55	5.63	8.62	8.66	8.05	9.25	44.37	5839	19450
मई-11	7.15	7.05	6.94	9.49	9.30	8.31	9.48	44.90	5492	18325
जून-11	7.38	7.30	7.06	10.15 [^]	9.61	8.28	9.63	44.85	5473	18229

*: दैनिक भारत मांग मुद्रा दरों का औसत
@: दैनिक फिन्डा अंतिम दरों का औसत
डब्ल्यूएडीआर: भाराकित औसत बट्टा दर

** : दैनिक अंतिम सूचकांकों का औसत
@@: दैनिक भारिबैं संदर्भ दर का औसत
डब्ल्यूएईआइआर: भाराकित औसत प्रभावी ब्याज दर

^: जून 2011 के मध्य में

सारणी V.3: देशी वित्तीय बाजारों में औसत दैनिक मात्रा

(करोड़ रुपये)

	मुद्रा बाजार						बांड बाजार		विदेशी मुद्रा बाजार	शेयर बाजार #
	एलएफ	मांग मुद्रा	बाजार रिपो	सीबीएलओ	वाणिज्यिक पत्र *	जमा प्रमाण पत्र *	सरकारी प्रतिभूति @	कारपोरेट बांड	अंतर बैंक (अम. डॉलर एम एन)	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
मार्च-10	37,640	8,812	19,150	60,006	75,506	3,41,054	6,621	1,598	16,082	9,191
मार्च-11	-80,963	11,278	15,134	43,201	80,305	4,24,740	8,144	1,314	22,211	7,276
अप्रैल-11	-18,809	13,383	14,448	56,160	1,24,991	4,47,354	6,928	1,053	25,793	8,277
मई-11	-54,643	10,973	15,897	40,925	1,21,221	4,33,287	7,356	691	24,167	6,668
जून-11	-74,125	11,562	16,650	41,313	1,23,400 ^	4,23,767	12,844	1,168	19,099**	6,404

*: बकाया की स्थिति।

@: केंद्र सरकार की दिनांकित प्रतिभूतियों में औसत दैनिक तत्काल व्यापार की मात्रा।

#: बीएसई और एनएसई की मात्रा।

^: जून 2011 के मध्य में

** : 24 जून 2011 तक

टिप्पणी: स्तंभ 2 (-) चलनिधि की आपूर्ति और (+) चलनिधि अवशोषण दर्शाते हैं।

V.10 खुदरा जमाराशि संग्रह में तेज वृद्धि होने से बैंकों ने सीडी पर 2011-12 के दौरान अब तक (17 जून तक) पिछली तिमाही की तुलना में कम ब्याज दरें प्रस्तावित कीं। 2011-12 की ति1 में सीडी का निर्गम कम हो गया। इसके विपरीत सीपी निर्गम में वृद्धि हो गयी। "पट्टादाय और वित्त" और "विनिर्माण कंपनियां" सीपी की प्रमुख निर्गमकर्ता थीं (चार्ट V.2ख, V.3)।

V.11 खजाना बिलों पर प्राथमिक प्रतिलाभ 2011-12 की ति1 के दौरान बढ़ गया जो कि अल्पावधि ब्याज दरों में वृद्धि के अनुरूप था (सारणी V.4)। प्रतिलाभ में वृद्धि ने मार्च 2011 में घोषित सांकेतिक कैलेंडर की राशि के अतिरिक्त खजाना बिलों के माध्यम से और विशेष रूप से व्यापक कर वापसी की स्थिति में अनपेक्षित तेज नकदी प्रवाह

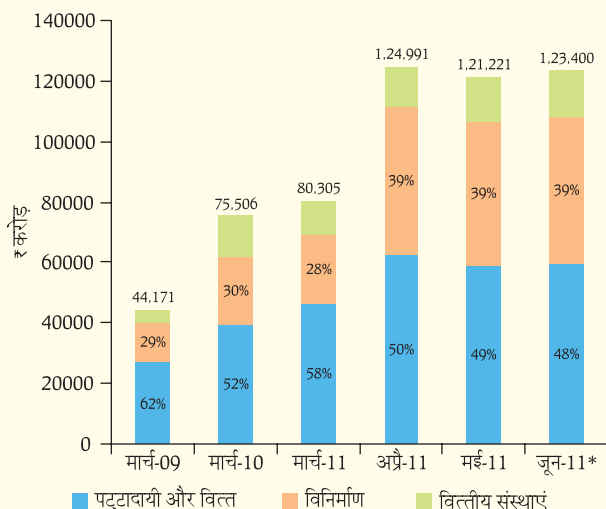
का बमेल दूर करने के लिए नकदी प्रबंधन बिल (सीएमबी) निर्गम के माध्यम से सरकारी अल्पावधि उधार में तेज वृद्धि दर्शायी।

अल्पावधिक तेज वृद्धि से आय वक्र सपाट हो गया

V.12 सरकार द्वारा खजाना बिलों और नकदी प्रबंधन बिलों के अपेक्षा से अधिक निर्गम और मई 2011 में रिजर्व बैंक के नीतिगत दर में अपेक्षा से अधिक वृद्धि दर्शाते हुए आय वक्र विशेष रूप से अल्पावधि संदर्भ में ऊपर हो गया जिससे आय वक्र सपाट हो गया। अवधिपूर्णाता के दायरों में आय में वृद्धि ने वैश्विक पण्य मूल्यों, कच्चे तेल सहित, और उच्च मुद्रास्फीति की निरंतरता को दर्शाया। किंतु वृद्धि संबंधी चिंताओं और कच्चे तेल के मूल्यों में गिरावट के कारण उसके बाद आय वक्र नीचे की ओर मुड़ गया (चार्ट V.4क)।

V.13 स्फीतिकारी दबावों और कम चलनिधि की स्थिति के संदर्भ में प्राथमिक बाजार की आय बढ़ गयी। प्राथमिक नीलामियों में भारांकित औसत आय 2011-12 की ति1 के दौरान बढ़ गयी (सारणी V.5)। किंतु निवेशक विश्वास सामान्यतः बरकरार रहा। बिड-कवर अनुपात

चार्ट V.3: वाणिज्यिक पत्रों के प्रमुख जारीकर्ता



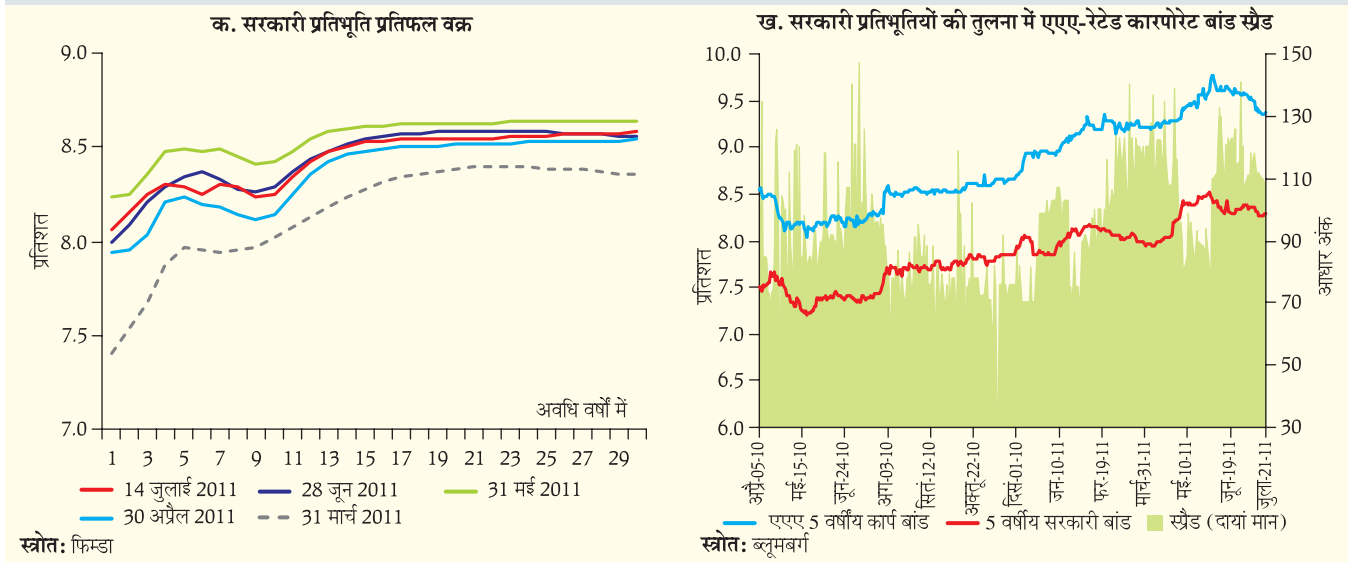
टिप्पणी: आंकड़े 15 जून 2011 तक के हैं।

सारणी V.4: प्राथमिक बाजार में ट्रेजरी बिल

वर्ष/माह	अधिसूचित राशि (₹ करोड़)	न्यूनतम कटऑफ कीमत पर औसत निहित प्रतिफल (प्रतिशत)		
		91-दिवस	182-दिवस	364-दिवस
1	2	3	4	5
2009-10	3,80,000	3.57	3.97	4.38
2010-11	3,03,000	6.18	6.48	6.56
अप्रैल-11	30,000	7.32	7.60	7.65
मई-11	44,000	8.05	8.24	8.25
जून-11	53,000	8.21	8.19	8.32
जुलाई-11*	20,000	8.16	8.27	8.27

*: 5 जुलाई 2011 तक

चार्ट V.4: बांड बाजार में टर्नओवर और प्रतिफल



2011-12 की ति1 के दौरान 1.39-3.20 के दायरे में था जबकि पिछले वर्ष की इस अवधि में यह 1.39-3.87 के दायरे में था। सपाट होते आय वक्र को ध्यान में रखते हुए दीर्घकालिक अधिक प्रतिभूतियां जारी की गयीं और तदनुसार 2011-12 की ति1 के दौरान जारी दिनांकित प्रतिभूतियों की भारांकित औसत अवधिपूर्णता बढ़ गयी।

V.14 2011-12 के दौरान अब तक (15 जुलाई 2011 तक) 13 राज्यों ने सकल आधार पर 31,773 करोड़ रुपये जुटाये जबकि 2010-11 की इसी अवधि में उन्होंने 28,210 करोड़ रुपये जुटाये थे।

V.15 समतुल्य सरकारी प्रतिभूति की तुलना में 5-वर्षीय कंपनी बांडों का अंतर मई 2011 के दौरान कम हो गया जो कि सरकारी अल्पावधि उधार में अनपेक्षित वृद्धि दर्शाता है। यह अंतर जून में बढ़

गया जो कि मुख्यतः कंपनी बांडों पर प्रतिफल बढ़ना दर्शाता है (चार्ट V.4ख)।

मौद्रिक नीति का प्रभाव बढ़ गया और ऋण बाजार में दरों में वृद्धि हुई

V.16 2011-12 की ति1 के दौरान ऋण बाजार में मौद्रिक नीति का प्रभाव और बढ़ गया क्योंकि रिजर्व बैंक द्वारा नीतिगत दर वृद्धि के प्रतिसाद में बैंकों ने भी अपनी जमाराशि तथा उधार दरों में वृद्धि की (सारणी V.6)। 2011-12 की ति1 के दौरान बैंकों की सभी अवधिपूर्णताओं की उधार दरों में 10-300 आधार अंकों के दायरे में वृद्धि हुई। कुल बैंक जमाराशि के लगभग 65 प्रतिशत हिस्से वाले तेईस प्रमुख बैंकों ने अपनी उधार दरों में 25-175 आधार अंकों के दायरे में वृद्धि की। जमाराशि दरों में वृद्धि सभी श्रेणी के बैंकों के संबंध में 1 वर्ष तक की अवधिपूर्णता के संबंध में सर्वाधिक थी। बचत खाता जमाराशियां कुल जमाराशि का लगभग एक चौथाई होती हैं, अतः बचत खाता दरों में 50 आधार अंकों की वृद्धि से बैंकों की निधि की लागत भी बढ़ गयी। तिमाही के दौरान सभी अनुसूचित वाणिज्य बैंकों ने अपनी आधार दरों में 25-225 आधार अंकों के दायरे में वृद्धि की जिनमें से लगभग 98 प्रतिशत ऋण हिस्से वाले 47 प्रमुख बैंकों ने अपनी आधार दरों में 50-125 आधार अंकों की वृद्धि की।

विनिमय दर कम घट-बढ़ के साथ लचीली बनी रही

V.17 2011-12 के दौरान (20 जुलाई 2011 तक) रुपये में जापानी येन को छोड़कर अन्य सभी प्रमुख मुद्राओं के प्रति कुछ मूल्यवृद्धि

सारणी V.5: केंद्र और राज्य सरकार की दिनांकित प्रतिभूतियों का निर्गम

मद	2009-10	2010-11	2011-12*
1	2	3	4
केंद्र सरकार			
जुटायी गयी सकल राशि (करोड़ रुपये)	4,51,000	4,37,000	1,59,000
प्राथमिक व्यापारियों पर न्यागमन (करोड़ रुपये)		7,21,95,773	1,506
बिड-कवर अनुपात (दायरा)	1.44-4.32	1.39-3.88	1.39-3.20
भारांकित औसत परिपक्वता (वर्ष)	11.16	11.62	12.35
भारांकित औसत आय (प्रतिशत)	7.23	7.92	8.38
राज्य सरकार			
जुटायी गयी सकल राशि (करोड़ रुपये)	1,31,122	1,04,039	31,773
कट-ऑफ आय (प्रतिशत)	7.04-8.58	8.05-8.58	8.36-8.69
भारांकित औसत आय (प्रतिशत)	8.11	8.39	8.57

*: 15 जुलाई 2011 तक

सारणी V.6: बैंकों की जमा और उधार दरें

(प्रतिशत)				
	सितं-10	दिसं-10	मार्च-11	जून-11
1	2	3	4	5
देशी जमा दर (1 से 3 वर्ष की अवधि)				
(i) सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक	6.75-7.75	7.00-8.50	8.00-9.75	8.25-9.75
(ii) निजी क्षेत्र के बैंक	6.50-8.25	7.25-9.00	7.75-10.10	8.00-10.50
(iii) विदेशी बैंक	3.00-8.00	3.50-8.50	3.50-9.10	3.50-10.00
आधार दर				
(i) सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक	7.50-8.25	7.60-9.00	8.25-9.50	9.25-10.00
(ii) निजी क्षेत्र के बैंक	7.00-8.75	7.00-9.00	8.25-10.00	8.50-10.50
(iii) विदेशी बैंक	5.50-9.00	5.50-9.00	6.25-9.50	6.25-9.50
वास्तविक उधार दर*				
(i) सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक	7.75-13.50	8.75-13.50	8.88-14.00	-
(ii) निजी क्षेत्र के बैंक	8.00-15.00	8.25-14.50	9.00-14.50	-
(iii) विदेशी बैंक	7.25-13.00	8.00-14.50	7.70-14.05	-

* : ब्याज दरों का मध्य दायरा जिसमें न्यूनतम 60 प्रतिशत कारोबार की संविदा की गयी।

-: अनुपलब्ध

टिप्पणी : सारणी से लिया गया जमाराशी ब्याज दरों में बैंक समूह-वार अंतर विषयवस्तु के अंतर से भिन्न होगा क्योंकि यह बाद वाला अंतर जमाराशि ब्याज दरों में बैंक-वार और अवधि-वार अंतर के आधार पर है।

हुई जो कि आंशिक रूप से अमरीका में वृद्धि की संभावना की अनिश्चितता के कारण अंतरराष्ट्रीय मुद्रा बाजार में डॉलर में घट-बढ़ दर्शाती है (चार्ट V.5क)। पिछली तिमाही की तुलना में विदेशी मुद्रा बाजार के अंतर-बैंक घटक में औसत दैनिक पण्यवर्त अधिक था जबकि वणिग घटक में यह कम था। 1 माह, 3 माह और साथ ही 6 माह का वायदा प्रीमिया तिमाही के दौरान काफी कम हो गया जो कि वायदा बाजार में निर्यातकों द्वारा आपूर्ति में वृद्धि करना दर्शाता है। 2011-12 के दौरान अब तक रिजर्व बैंक ने विदेशी मुद्रा बाजार में हस्तक्षेप नहीं किया है।

V.18 विनिमय व्यापारगत मुद्रा डेरिवेटिव में औसत दैनिक पण्यवर्त पिछली तिमाही की 2.8 प्रतिशत की नकारात्मक वृद्धि की तुलना में

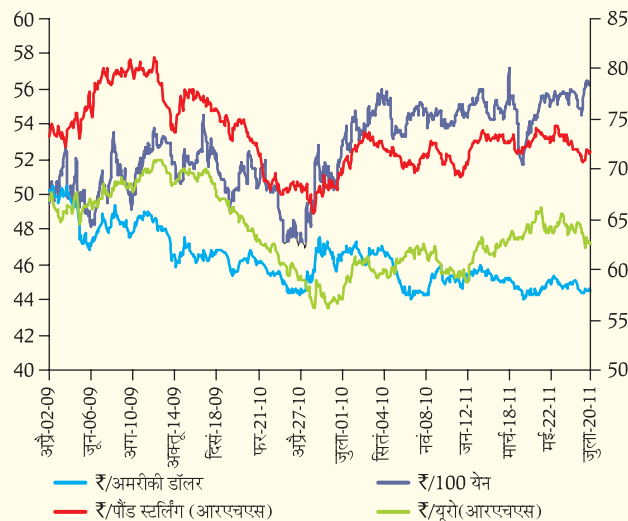
1.7 प्रतिशत बढ़ा (चार्ट V.5ख)। फ्यूचर्स की तुलना में ऑप्शन्स की वृद्धि दर अधिक थी। ओटीसी मुद्रा डेरिवेटिव में स्वेप घटक की प्रमुखता बनी निरंतर रही। ओटीसी बाजार में औसत दैनिक पण्यवर्त में पिछली तिमाही की 3.7 प्रतिशत की नकारात्मक वृद्धि की तुलना में 2011-12 की ति1 के दौरान लगभग 14.8 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

इक्विटी बाजारों में नरमी और कम अस्थिरता बनी रही

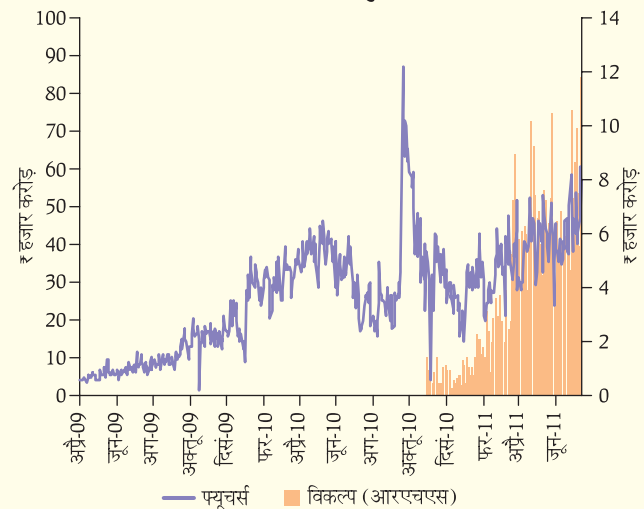
V.19 संकटोत्तर काल में इक्विटी बाजारों में अस्थिरता काफी कम हो गयी। गिरावट की यह प्रवृत्ति 2011-12 की ति1 में निरंतर बनी रही। ति1 के दौरान भारतीय इक्विटी बाजारों का निष्पादन तुलनात्मक

चार्ट V.5: विदेशी मुद्रा बाजार की प्रवृत्तियां

क. रुपये की सांकेतिक विनियम दर



ख: विनिमय बाजार में व्यापारित मुद्रा डेरिवेटिव की मात्रा



सारणी V.7: प्रमुख शेयर बाजार संकेतक

संकेतक	बीएसई सेंसेक्स		एनएसई निफ्टी	
	2010-11	अप्रै-जून 2011-12	2010-11	अप्रै-जून 2011-12
1	2	3	4	5
बीएसई सेंसेक्स/एनएसई निफ्टी				
(i) अंतिम अवधि	19445.22	18845.87	5833.75	5647.40
(ii) औसत	18605.18	18617.73	5583.54	5585.97
भिन्नता का सह-गुणक	6.32	3.28	6.40	3.31
मूल्य अर्जन अनुपात [@]	21.25	19.94	22.14	20.82
मूल्य - बही कीमत अनुपात	3.70	3.48	3.70	3.50
जोड़ीपी की तुलना में बाजार पूंजीकरण अनुपात (प्रतिशत) [@]	86.80	74.90	85.10	73.20

[@]: समाप्त अवधि के अनुसार।

स्रोत: बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज लिमिटेड (बीएसई) और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज ऑफ इंडिया लिमिटेड (एनएसई)।

रूप से यद्यपि अन्य बीआरआईसी देशों से बेहतर था, किंतु दो प्रमुख संकेतकों अर्थात् सेंसेक्स और निफ्टी में लगभग 3 प्रतिशत की गिरावट हुई (सारणी V.7)। तेल के बढ़ते मूल्य, निरंतर उच्च मुद्रास्फीति, रिजर्व बैंक द्वारा नीतिगत दरों में पुनः वृद्धि, देशी राजनैतिक घटनाएं और ग्रीक सरकारी ऋण संकट में वृद्धि ने बाजार भावना पर प्रतिकूल प्रभाव डाला। इक्विटी और ऋण घटक में विदेशी संस्थागत निवेशकों द्वारा 2011-12 की ति1 के दौरान 1.0 बिलियन अमरीकी डॉलर का निवल निवेश किया गया जिसमें से इक्विटी बाजार को हुआ प्रवाह 0.8 बिलियन अमरीकी डॉलर था (चार्ट V.6)। किंतु विदेशी संस्थागत निवेशकों कि निवेश में सुधार होने से जून के अंत में इक्विटी बाजारों में तेजी आयी।

V.20 स्टॉक मूल्य प्रतिलाभ स्टॉक प्रतिलाभ की घट-बढ़ से प्रभावित हुए और इस प्रभाव की सीमा प्रतिलाभ में अंतर के आघातों की निरंतरता

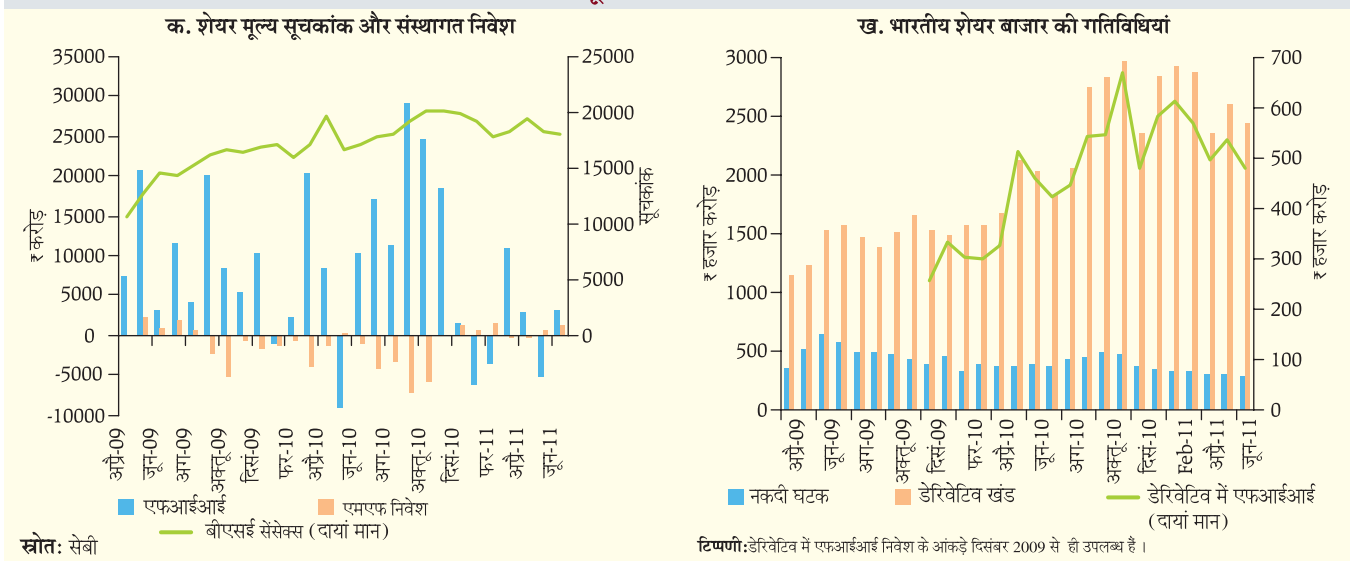
पर निर्भर करती है। वित्तीय संकट और मौद्रिक नीतिगत कार्रवाई की पृष्ठभूमि में व्यापक आधारित एसएंडपी सीएनएक्स निफ्टी सूचकांक से प्रतिलाभों का विश्लेषण प्रतिलाभ के आंकड़ों में समय-अंतर में घट-बढ़ की निरंतरता दर्शाता है (चार्ट V.7क और ख)। प्रतिलाभ में अंतर, सभी अन्य पूर्व कारकों के लिए नियंत्रक, संकट की अवधि से तेज गिरावट दर्शाती है और इसमें और गिरावट दिख रही है।

V.21 इक्विटी डेरिवेटिव घटक में पण्यवर्त, जो कि समग्र लिखतों का लगभग 90 प्रतिशत होता है, में 2011-12 की ति1 में कुछ कमी आयी। भारतीय घट-बढ़ सूचकांक (वीआईएक्स) द्वारा नापी गयी निफ्टी सूचकांक ऑप्शन्स की घट-बढ़ 2010-11 की ति4 से 2011-12 की ति1 में कम थी।

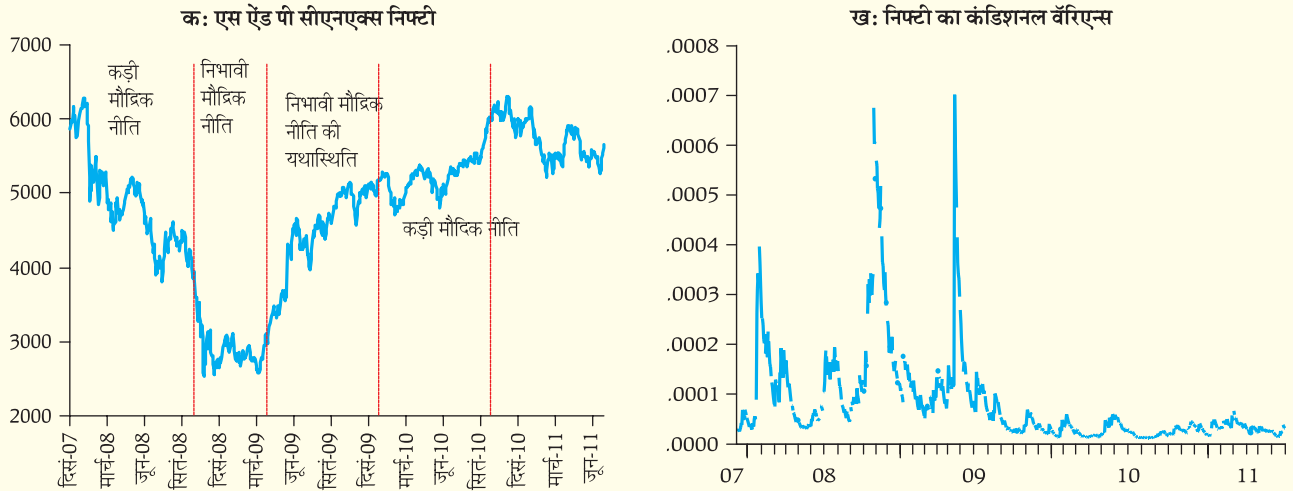
V.22 सार्वजनिक निर्गमों के माध्यम से देशी पूंजी बाजार के प्राथमिक घटक में संसाधन संग्रह 2011-12 की ति1 में पिछले वर्ष की इसी तिमाही की तुलना में कम था (सारणी V.8)। आईपीओ की सूचीबद्धता के बाद उनके साधारण निष्पादन ने निवेशक और प्रवर्तकों की भावना को प्रभावित किया।

V.23 पारस्परिक निधियों द्वारा अप्रैल-जून 2011 के दौरान संसाधन संग्रहण पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में अधिक था हालांकि मई-जून 2011 के दौरान विशेष रूप से ऋण पारस्परिक निधियों में निवल बहिर्वाह हुए थे। 1 जून 2011 से चलनिधि/ऋण पारस्परिक निधियों में खुदरा से भिन्न निवेशकों के लिए लाभांश वितरण कर में

चार्ट V.6: शेयर मूल्यों और टर्नओवर की गतिविधियां



चार्ट V.7: भारतीय शेयर बाजार का निष्पादन



टिप्पणी: विवरणियों में कंडिशनल वॉरिएन्स की प्रभावी मॉडलिंग के लिए जीएआरसीएच (जनरलाइज्ड आटोरिग्रेसीव कंडिशनल हिटरोस्केडास्टिक) मॉडल की अनुमति दी गयी।

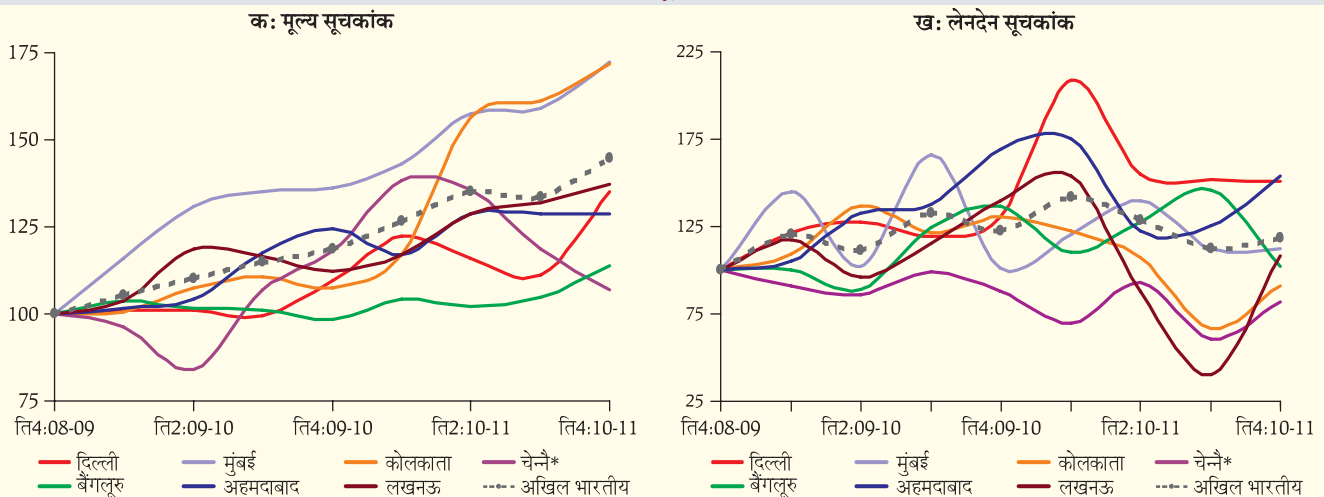
वृद्धि और चलनिधि/ऋण निधियों में बैंकों के निवेश पर लगायी गयी निवल मालियत के 10 प्रतिशत की उच्चतम सीमा, जो कि 5 जुलाई 2011 से छह माह की अवधि के लिए लागू की जाएगी, से ऋण पारस्परिक निधियों में प्रवाह प्रभावित हुए होंगे।

2010-11 की ति4 में आवास मूल्यों और लनदेनों में वृद्धि हुई

V.24 बंधक दरों में वृद्धि के बावजूद 2010-11 के दौरान संपत्ति के मूल्यों में वृद्धि हुई। संबंधित राज्य सरकारों के पंजीयन और स्टैम्प

विभागों से प्राप्त सात शहरों संबंधी आंकड़ों पर आधारित रिजर्व बैंक के तिमाही आवास मूल्य सूचकांक से पता चलता है कि 2010-11 की ति4 में तिमाही-दर-तिमाही आधार पर सात प्रमुख शहरों में से पांच में मूल्य अधिक थे किंतु अहमदाबाद में स्थिर थे और चेन्नई में निरंतर कम हुए थे (चार्ट V.8)। लेनदेनों की संख्या के आंकड़े दर्शाते हैं कि 2010-11 की ति3 में स्थिर रहने के बाद ति4 में लेनदेनों में वृद्धि हुई। वर्ष-दर-वर्ष आधार पर छह शहरों (अर्थात् चेन्नई छोड़कर) में ति4 में आवास मूल्यों में वृद्धि हुई। किंतु सात में से पांच शहरों (अर्थात् दिल्ली और मुंबई छोड़कर) में आवासीय लेनदेनों में गिरावट आयी।

चार्ट V.8: आवास सूचकांकों की प्रवृत्ति



टिप्पणी: 1. * चेन्नई के सूचकांक में निवासी और वाणिज्यिक दोनों संपत्तियां शामिल हैं।
2. अखिल भारतीय सूचकांक जनसंख्या पर आधारित 7 शहरों का भारांकित औसत है।

**सारणी V.8: पूंजी बाजार से
संसाधन जुटाना**

(₹ करोड़)			
श्रेणी	2010-11 (अप्रै-मार्च)	2010-11 (अप्रै-जून)	2011-12 (अप्रै-जून)
1	2	3	4
विवरण पत्र एवं अधिकार पत्र मामले *	37,620	7,737	7,000
1. निजी क्षेत्र (क+ख)	24,831	7,737	2,422
(i) वित्तीय	4,335	2,550	901
(ii) गैर वित्तीय	20,496	5,187	1,521
2. सार्वजनिक क्षेत्र	12,790	0	4,578
यूरो निर्गम	9,441	4,844	1,237
म्यूचुअल फंड जुटाना (निवल)@	-49,406	3,547	73,039
1. निजी क्षेत्र	-19,215	14,109	64,425
2. सार्वजनिक क्षेत्र#	-30,191	-10,562	8,614

*: बिक्री के ऑफर को छोड़कर। @:मोचन को घटाकर।

#: यूटीआइ म्यूचुअल फंड सहित।

स्रोत: म्यूचुअल फंड आंकड़ों का स्रोत सेबी है और इसमें निधी स्कीम की निधियों के अंतर्गत जुटाई गयी निधियां शामिल नहीं है।

**समष्टि स्थिति प्रतिकूल हुई तो बाजारों की अस्थिरता पुनः
उभर सकती है**

V.25 बाजारों की वर्तमान स्थिति में परिवर्तन हो सकता है। समष्टि स्थिति अधिक प्रतिकूल हुई तो बाजारों में पुनः अस्थिरता आ सकती है।

V.26 भारतीय वित्तीय बाजार वैश्विक और देशी कारकों से प्रभावित होते रहेंगे। मुद्रा बाजार के दरों का मौद्रिक नीतिगत कार्रवाइयों से प्रभावित होना जारी रहेगा। यदि दीर्घकालिक मुद्रास्फीति स्फीतिकारी आशंकाओं को प्रभावित करेगी तो इससे बाजार के सभी घटक और विशेष रूप से सरकारी प्रतिभूति बाजार प्रभावित होंगे। राजकोषीय घाटा बढ़ने से उधार की राशि अनुमान से अधिक हो सकती है जो कि सरकारी प्रतिभूति पर आय पर ऊर्ध्वमुखी दबाव ला सकती है। आर्थिक वृद्धि में नरमी कंपनियों के निष्पादन को प्रभावित कर सकती है जिससे इक्विटी बाजार प्रभावित होंगे।